I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

B.H.D.F.-101

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम

By: Saroj Pant M.A. (Hindi), B.Ed.

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-6
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-5
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-6
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2014 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2013 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1-7
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-7
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-7

Chapterwise Reference Book

S.No.		*Page*
1.	हिन्दी की लिपि और वर्तनी का परिचय	1
2.	हिन्दी की ध्वनियाँ	10
3.	विज्ञान के विषय का बोधन	13
4.	संस्कृति विषय का बोधन और शब्दकोश का उपयोग	16
5.	समाज विज्ञान विषय का बोधन और निबन्ध रचना का परिचय	19

S.No.	Chapter	Page
6.	भाषण शैली	23
7.	सामाजिक विज्ञानों की भाषा (इतिहास के संदर्भ में) तथा वर्तनी के कुछ नियम	27
8.	सामाजिक विज्ञानों की भाषा (राजनीति विज्ञान) तथा शब्द रचना	36
9.	मानविकी की भाषा (ललित कला) तथा विशेषण	41
10.	विज्ञान की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द	47
11.	विज्ञान की भाषा का स्वरूप	50
12.	विधि और प्रशासन की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द और अर्थ	55
13.	कहानी : पूस की रात–*प्रेमचन्द*	62
14.	व्यंग्य निबंध : वैष्णव की फिसलन –*हरिशंकर परसाई*	69
15.	एकांकी : बहुत बड़ा सवाल –*मोहन राकेश*	75
16.	निबंध : जीने की कला –*महादेवी वर्मा*	81
17.	आत्मकथा : जूठन –*ओम प्रकाश वाल्मीकि*	87
18.	कविताएँ (1. सूरदास, 2. तुलसीदास, 3. मैथिलीशरण गुप्त, 4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', 5. महादेवी वर्मा)	91
19.	शब्द और मुहावरे	103
20.	संवाद शैली	114
21.	सरकारी पत्राचार तथा टिप्पण और प्रारूपण	119
22.	समाचार लेखन : संपादकीय	131
23.	अनुवाद	137
24.	संक्षेपण, भाव पल्लवन और निबंध लेखन	147

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

***नोट :** किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. 'जीने की कला' निबंध के विचार पक्ष और भाव पक्ष को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-81, प्रश्न 2, पृष्ठ-82, प्रश्न 3, पृष्ठ-83, प्रश्न 6

प्रश्न 2. 'बहुत बड़ा सवाल' एकांकी की संवाद योजना की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–एकांकी का प्राण है, उसमें सहज-स्वाभाविक संवादों की योजना। 'बहुत बड़ा सवाल' एकांकी में मोहन राकेश ने अपनी आजमाई हुई तमाम सारी रंगमंचीय युक्तियों को छोड़कर अपने संवाद-कौशल का चरमोत्कर्ष प्रकट किया है। नाटक या एकांकी के संवाद अत्यंत चुस्त-दुरुस्त और छोटे होने चाहिए, जिनसे पात्रों की मनोदशा भी अच्छी तरह व्यक्त हो सके। इसके साथ ही रंगशाला (थिएटर) में उपस्थित दर्शकों पर भी उनका पूरा प्रभाव पड़ना चाहिए। वे यह न समझें कि नाटक देख रहे हैं। जीवन में साक्षात उपस्थित वास्तविक क्रियाकलाप की सच्ची अनुभूति दर्शक कर सकें–यह महत्त्वपूर्ण कार्य संवादों के माध्यम से ही पूरा हो पाता है। इस कौशल का परिचय लेखक ने एकांकी के आरंभ में इस प्रकार दिया है–

'परदा उठने पर राम भरोसे और श्याम भरोसे डेस्कों से धूल झाड़ रहे हैं।'

श्याम भरोसे : (हाथ रोककर) राम भरोसे!
राम भरोसे बिना सुने धूल झाड़ता रहता है।
: ए राम भरोसे!
राम भरोसे : (बिना हाथ रोके) क्या है?

इन संवादों की सहजता दर्शक को पूरी तरह अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम है। यह अशिक्षित कर्मचारियों की आपसी बातचीत है। मीटिंग में भाग लेने वाले शिक्षित पात्रों के संवाद उनके चरित्र को भी दर्शकों के सामने उद्घाटित कर देते हैं। इससे सम्बद्ध एक आरंभिक उदाहरण है–

''राम भरोसे और श्याम भरोसे दोनों दायीं तरफ के दरवाजे के बाहर बैठे हैं। राम भरोसे हाथ पर सुरती मलने लगता है। श्याम भरोसे ऊँघने की मुद्रा में टेक लगा लेता है। मनोरमा, संतोष और गुरप्रीत उसी दरवाजे से आती हैं। राम भरोसे आंखें उठाकर चिढ़ते हुए भाव से उन्हें आते देखता है।''

मंच पर उपस्थित होते ही यहां आये चारों पात्रों की नीयत और उनके चरित्र का पूर्वाभास दर्शक को हो जाता है, जो उनके विषय में अंत तक बरकरार रहता है। शिक्षित समुदाय में प्रचलित व्यवहार की भाषा में 'अवर शर्मा इस ग्रेज', 'लोंग लिव शर्मा', 'प्लीज' आदि अंग्रेजी के शब्द अत्यंत स्वाभाविक हैं। मनोरमा और शर्मा के आरंभिक वाक्यों में हिन्दी के वाक्य गठन, लहजे और प्रश्न के उत्तर में प्रश्न संवाद की भाषा को अधिक व्यंजक बनाता है। इसके साथ ही कमरे के बाहर का यथार्थ वातावरण पूरे दृश्य को प्रामाणिक बनाने में सहायक है। इसका दर्शक पर अत्यंत अनुकूल असर पड़ता है।

आगे चलकर प्रेम प्रकाश, दीनदयाल, मोहन, रमेश और सत्यपाल भी मंच पर उपस्थित होते हुए ही अपने संवाद या कार्यों द्वारा अपनी-अपनी नीयत और चरित्र का पूर्वाभास दर्शकों के सामने दे देते हैं। पूरे एकांकी में एकांकीकार ने अपने इस आरंभिक संकेत का कुशलतापूर्वक निर्वाह किया है। अनुपस्थित अध्यक्ष की निंदा करते हुए कपूर के रहस्योद्घाटन पर पात्रों के मध्य होने वाला संवाद इसका एक ज्वलंत उदाहरण हैं–

संतोष : किसके यहां?
गुरप्रीत : प्लीज!
संतोष : नाम तो जान लेने दे।
गुरुप्रीत : प्लीज! प्लीज! प्लीज!
कपूर : गुरप्रीत जी नाम जानती हैं।
संतोष : जानती है तू?.....

उपर्युक्त संवादों के माध्यम से 'लो पेड वर्कर्स वेलफेयर सोसाइटी' के सदस्यों के वैचारिक स्तर, उनकी मानसिकता, छिछलेपन और दायित्वहीनता का बोध दर्शक को अच्छी तरह हो जाएगा। इसके साथ ही यहां संवाद की भाषा की एक विशिष्ट प्रकृति का भी पूरा परिचय मिलता है। बातचीत के लहजे, दो शब्दों के बीच का अंतराल, बलाघात, शब्द या वाक्य के अंत का रिक्त स्थान, संबोधन, प्रश्नवाचक चिह्नों आदि के समुचित

www.neerajbooks.com

प्रयोग द्वारा संवादों को अधिक चुस्त-दुरुस्त और भाषा को अत्यंत व्यंजक बनाने का प्रयास इस एकांकी में किया गया है। उक्त संवादों में प्रश्न चिह्न (?) कहीं प्रश्न का बोध कराता है तो कहीं आश्चर्य का, कहीं उपेक्षा का तो कहीं जिज्ञासा का। इससे स्पष्ट है कि संवाद-कौशल के साथ ही इस एकांकी द्वारा मोहन राकेश की भाषा संबंधी गहरी परख और अभिधा, लक्षणा, व्यंजना जैसी शब्द-शक्तियों के समुचित प्रयोग की सामर्थ्य भी उद्घाटित हुई है।

उपर्युक्त विवेचन-विश्लेषण के बाद हम कह सकते हैं कि 'बहुत बड़ा सवाल' शीर्षक एकांकी अपने संवाद-कौशल के कारण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अपने सामाजिक-राजनीतिक परिवेश के प्रति लेखक की मानसिकता का स्वरूप चाहे जैसा हो, जीवन के प्रति उसकी दृष्टि, रुख-रुझान चाहे जैसी हो, लेकिन उसकी रंगमंचीय समझ और उसके संवाद-कौशल की दृष्टि से 'बहुत बड़ा सवाल' एक सफल एकांकी है। पात्रों की मानसिकता के साथ एकांकीकार की मानसिकता का तादात्म्य संवादों को स्वभाविकता ही नहीं जीवन्तता भी प्रदान करता है।

इसे भी देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-80, प्रश्न 11

प्रश्न 3. सूरदास के भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-92, प्रश्न 4

प्रश्न 4. देवनागरी लिपि का परिचय दीजिए।

उत्तर–अधिकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे शिरोरेखा कहते हैं। देवनागरी का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती-जुलती हैं, जैसे- बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है।

भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू-ब-हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है, जब तक कि उनका विशेष मानकीकरण न किया जाये, जैसे आइट्रांस या IAST

इसमें कुल 52 अक्षर हैं, जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर-व्यंजन, कोमल-कठोर, अल्पप्राण-महाप्राण, अनुनासिक्य-अन्तस्थ-ऊष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं। एक मत के अनुसार देवनगर (काशी) मे प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं पर उच्चारण व वर्ण-क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं, क्योंकि वे सभी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं (उर्दू को छोडकर), इसलिए इन लिपियों को परस्पर आसानी से लिप्यन्तरित किया जा सकता है। देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौन्दर्य की दृष्टि से सुन्दर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है।

भारतीय अंकों को उनकी वैज्ञानिकता के कारण विश्व ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

देवनागरी या नागरी नाम का प्रयोग "क्यों" प्रारम्भ हुआ और इसका व्युत्पत्तिपरक प्रवृत्तिनिमित्त क्या था-यह अब तक पूर्णतः निश्चित नहीं है।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से देवनागरी लिपि अक्षरात्मक (सिलेबिक) लिपि मानी जाती है। लिपि के विकाससोपानों की दृष्टि से 'चित्रात्मक', 'भावात्मक' और 'भावचित्रात्मक' लिपियों के अनंतर 'अक्षरात्मक' स्तर की लिपियों का विकास माना जाता है। पाश्चात्य और अनेक भारतीय भाषाविज्ञानविज्ञों के मत से लिपि की अक्षरात्मक अवस्था के बाद अल्फाबेटिक (वर्णात्मक) अवस्था का विकास हुआ। सबसे विकसित अवस्था मानी गई है ध्वन्यात्मक (फोनेटिक) लिपि की। 'देवनागरी' को अक्षरात्मक इसलिए कहा जाता है कि इसके वर्ण- अक्षर (सिलेबिल) हैं- स्वर भी और व्यंजन भी। 'क', 'ख' आदि व्यंजन सस्वर हैं- अकारयुक्त हैं। वे केवल ध्वनियां नहीं हैं, अपितु सस्वर अक्षर हैं। अतः ग्रीक, रोमन आदि वर्णमालाएं हैं। परंतु यहां यह ध्यान रखने की बात है कि भारत की 'ब्राह्मी' या 'भारती' वर्णमाला की ध्वनियों में व्यंजनों का 'पाणिनि' ने वर्णसमाम्नाय के 14 सूत्रों में जो स्वरूप परिचय दिया है-उसके विषय में 'पतंजलि' (द्वितीय शती ई. पू.) ने यह स्पष्ट बता दिया है कि व्यंजनों में संनियोजित 'अकार' स्वर का उपयोग केवल उच्चारण के उद्देश्य से है। वह तत्वतः वर्ण का अंग नहीं है। इस दृष्टि से विचार करते हुए कहा जा सकता है कि इस लिपि की वर्णमाला तत्वतः ध्वन्यात्मक है, अक्षरात्मक नहीं।

प्रश्न 5. अपने गांव या मुहल्ले की किसी समस्या के संदर्भ में जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।

उत्तर–सेवा में,

जिला अधिकारी,
गौतम बुद्ध नगर

विषय : जिला अधिकारी को स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था हेतु पत्र।

महोदय,

कमल कुंज के समस्त निवासी आपका ध्यान अपने मोहल्ले के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के व्यवस्था और सुरक्षा की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। आजकल वर्षा का मौसम चल रहा है। सभी सड़कों के गड्ढों में नालियों का गन्दा पानी भरा है। सड़क और की नालियां तो पानी का तालाब बन गयीं है, जिन पर

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम

हिन्दी की लिपि और वर्तनी का परिचय

1

प्रश्न 1. भाषा किसे कहते हैं? इसके दो रूप कौन-से हैं?

उत्तर–*अपने विचारों को आदान-प्रदान के माध्यम से प्रकट करने को भाषा कहते हैं।*

भाषा के दो मुख्य रूप हैं:

1. मौखिक भाषा; 2. लिखित भाषा।

बोली गई भाषा को लेखन के माध्यम से प्रकट करने हेतु जिन ध्वनि चिह्नों की आवश्यकता होती है, उन्हें लिपि कहते हैं। इस अध्याय में भाषा तथा लिपि के बारे में चर्चा की गई है।

प्रश्न 2. वर्तनी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–शब्द का लिखित रूप उसकी वर्तनी कहलाता है। इसे 'हिज्जे' भी कहा जाता है।

उदाहरणतया–'गीलास' गलत वर्तनी है, और 'गिलास' सही वर्तनी है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के अनुसार वर्तनी संबंधी कुछ नियम इस प्रकार हैं:

(1) संयुक्त वर्ण

(अ) खड़ी पाई वाले व्यंजन

क	ख	ग	घ		
च	ज	झ	ञ		
त		थ	ध	न	
प		फ	ब	भ	म
य	ल	व			
श	ष	स			

खड़ी पाई वाले व्यंजन का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर बनाया जाता है।

उदाहरणतया

पत्ता (त् + ता – त्ता) बच्चा (च् + चा – च्चा)

ध्वनि (ध् + व – ध्व) निम्न (म् + न – म्न)

प्यास (प् + या – प्या) सभ्य (भ् + य – भ्य)

(आ) बिना पाई वाले वर्णों (ङ, छ, ट, ठ, ढ, छ और ह) **के संयुक्ताक्षर हलंत का चिह्न (्) लगाकर बनाए जाते हैं।**

उदाहरणतया

लट्टू (ट् + टू – ट्टू) बुड्ढा (ड् + ढा – ड्ढा)

विद्या (द् + या – द्या) ब्रह्मा (ह् + मा – ह्मा)

इकट्ठा (ट् + ठा – ट्ठा) पट्टी (ट् + टी – ट्टी)

(इ) क और फ का संयुक्त व्यंजन बनाते समय इनका पीछे वाला भाग हटा लिया जाता है।

उदाहरणतया

पक्का (क् + का – क्का) धक्का (क् + का – क्का)

रफ्तार (फ् + ता – फ्ता) रिक्शा (क् + शा – क्शा)

(ई) 'र' के तीन रूप यथावत् रहते हैं।

उदाहरणतया

'र' का पहला रूप–प्रश्न, ग्रह, प्रकार, प्रसार, शीघ्र।

'र' का दूसरा रूप–कर्म, शर्म, आशीर्वाद।

'र' का तीसरा रूप–ट्रक, ड्रम, राष्ट्र आदि।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(उ) 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे 'श्र' के रूप में नहीं लिखा जाएगा।

(ऊ) त् + र के संयक्त रूप के लिए त्र और द्र दोनों में से किसी एक के प्रयोग की छूट होगी।

(ए) हलंत् चिह्न (्) युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व, यथा: कुट्टिम, द्वितीय, बुद्धिमान्, चिह्नित आदि।

(ऐ) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे।

उदाहरणार्थ

संयुक्त, विद्या, विद्वान्, वृद्ध।

(2) विभक्ति चिह्न

(अ) सभी विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्द से अलग लिखे जाएँगे।

उदाहरणतया

श्याम ने, राम को, रमेश से आदि।

(आ) परन्तु विभक्ति चिह्न सर्वनाम शब्दों के साथ लिखे जाएँगे।

उदाहरणतया

इसने, उसने, उसको, उनको आदि।

(इ) यदि सर्वनाम के साथ दो विभक्ति चिह्न हों, तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग करके लिखा जाएगा।

उदाहरणतया

इसमें से, उनके लिए आदि।

(3) क्रिया पद

संयुक्त क्रियाओं में सभी क्रियाएँ अलग लिखी जाएँगी।

उदाहरणतया

कर सकता है, जा सकता है, सो रहा है, खेल रहा है आदि।

(4) योजक चिह्न (-) (हाइफन)

योजक चिह्न निम्नलिखित अवस्थाओं में लगाया जाता है:

***(i)* द्वन्द्व समास में,**

उदाहरणतया

माता-पिता, अमीर-गरीब, ऊपर-नीचे, दु:ख-दर्द आदि।

***(ii)* सा, जैसा, सी, जैसी आदि से पहले।**

उदाहरणतया

तुम-सा, छोटा-सा, राम-जैसा आदि।

***(iii)* कठिन संधियों से बचने के लिए**

उदाहरणतया

द्वि-अक्षर, द्वि-अर्थक आदि।

(5) अव्यय

नियमानुसार अव्यय सदा अलग लिखे जाने चाहिए। जैसे– रात भर, वहाँ से, अब से, जब तक आदि।

लेकिन सामासिक या समस्त पदों में अव्यय एक साथ लिखे जाते हैं। जैसे–यथाशक्ति, प्रतिदिन, आमरण, आजन्म आदि।

(6) श्रुतिमूलक 'य', 'व'

क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि सभी रूपों में स्वरात्मक रूप का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे–किए, दिए, गए, नई, गई आदि।

जहाँ 'य' मूल रूप में है, परिवर्तित रूप में नहीं , वहाँ 'य' बना रहेगा।

जैसे–स्थायी, दायित्व, गाय आदि ।

(7) अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ)

(अ) यदि शब्द में पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, म, न) के बाद उसी वर्ग में से कोई वर्ण हो, तो अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे–कंगन, बंजर, झंडा, गंध, संपादक में अनुस्वार के बाद क्रमश: 'ग', 'ज', 'ड', 'ध' तथा 'प' वर्ण आए हैं जो कि 'क', 'च', 'ट', 'त' तथा 'प' वर्ग के वर्ण हैं। यदि इन्हें इनके पंचमाक्षर के साथ लिखा जाए, तो ये इस प्रकार लिखे जाएँगे-कङ्गन, बञ्जर, गन्ध, सम्पादक।

(आ) परन्तु यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए, तो पंचमाक्षर अनुस्वार रूप में नहीं लिखा जाएगा। जैसे–गन्ना, अन्न, सम्मेलन, चिन्मय, अन्य आदि को गंना, अंन, चिंमय, अंय नहीं लिख जाएगा।

(इ) अनुनासिक नाक व मुँह से निकलने वाली ध्वनियों को चिह्नित करने के लिए लगाया जाता है। जैसे–आँख, चाँद, हँसना, आँगन आदि।

जब अनुनासिक ध्वनि शिरोरेखा से ऊपर किसी अन्य मात्रा के साथ आती है, तो मुद्रण एवं लेखन की जटिलता से बचने के लिए उसे अनुस्वार रूप में लिखा जाता है। जैसे–मैंने, में, नहीं, उसमें, भैंस आदि को मैंने, मैं, नहीं, उसमें, भैंस नहीं लिखा जाता, क्योंकि ये दुविधा की स्थिति उत्पन्न करते हैं।

(8) विदेशी ध्वनियाँ

(अ) अरबी-फ़ारसी एवं अंग्रेजी की मुख्यत: पाँच ध्वनियाँ हिन्दी में आई हैं–क़, ख़, ग़, ज़, और फ़। लेकिन इनमें से क़, ग़ ध्वनियों का उच्चारण हिन्दी के क और ग में परिवर्तित हो गया है।

(आ) अंग्रेजी की 'ओ' ध्वनि वाले शब्दों के लिए हिन्दी में (ॅ) ध्वनि का प्रयोग किया जा रहा है।

उदाहरणतया–कॉलेज, ऑफिस, बॉक्स आदि।

(इ) कुछ हिन्दी शब्दों के दो रूप चल रहे हैं और दोनों ही मान्य हैं। जैसे

गरमी	गर्मी	कुरसी	कुर्सी
सरदी	सर्दी	बिलकुल	बिल्कुल
बरफ़	बर्फ़	भरती	भर्ती
दोबारा	दुबारा	बरदाश्त	बर्दाश्त

(9) हल् चिह्न (्)

हिन्दी में कुछ संस्कृत शब्दों के प्रयोग में हल् चिह्न नहीं लगाया जा रहा है। जैसे–सन, श्रीमान, भगवान, जगत आदि।

(10) स्वन परिवर्तन

संस्कृतमूलक शब्दों का संस्कृत रूप ही रखा जाना चाहिए। जैसे–ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अनाधिकार आदि को क्रमश: गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अनधिकार आदि लिखा जाना चाहिए।

(11) विसर्ग (:)

संस्कृतमूलक शब्दों के तत्सम रूप में विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है जैसे–दु:खानुभूति, जबकि उनके तद्भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका है। जैसे–सुख-दुख आदि।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ

व्याकरण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की वर्तनी एवं प्रयोग संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के साथ-साथ उच्चारण की अशुद्धियों को दूर करना भी है। जैसे

(1) स्वर तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

(क) शुद्ध शब्द — अशुद्ध शब्द

आगामी	अगामी
नाराज	नराज
आहार	अहार
साप्ताहिक	सप्ताहिक

(ख) 'आ' की मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अधीन	आधीन	हस्तक्षेप	हस्ताक्षेप
अपना	आपना	बरात	बारात

(ग) 'ई' की मात्रा की जगह 'इ' की मात्रा होनी चाहिए

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अतिथि	अतिथी	तिथि	तिथी
क्योंकि	क्योंकी	नीति	नीती
कालिदास	कालीदास	परिचय	परीचय

(घ) निम्नलिखित शब्दों में 'इ' की मात्रा छूट गई है:

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आध्यात्मिक	आध्यात्मक	शिविर	शिवर
गृहिणी	गृहणी	सरोजिनी	सरोजनी
नायिका	नायका	क्षणिक	क्षणक

(ङ) 'इ' की मात्रा के स्थान पर 'ई' की मात्रा नहीं होनी चाहिए

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आशीर्वाद	आशिर्वाद	महीना	महिना
बीमारी	बिमारी	श्रीमती	श्रीमति
पत्नी	पत्नि	निरीक्षण	निरिक्षण

(च) 'इ' की मात्रा नहीं होनी चाहिए

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
तिरस्कार	तिरिस्कार	वापस	वापिस
द्वारका	द्वारिका	सामग्री	सामिग्री
चाहता	चाहिता	प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी

(छ) 'उ' व 'ऊ' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
साधु	साधू	वधू	वधु
रूठ	रुठ	सूरज	सुरज

(ज) ए, ऐ, अय की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
एक	ऐक	वेश्या	वैश्या
चाहिए	चाहिऐ	सैनिक	सेनिक

(झ) 'ई' तथा 'यी' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
नाई	नायी	लड़ाई	लड़ायी
मिठाई	मिठायी	स्थायी	स्थाई

(ञ) ओ, औ, अव, आव सम्बन्धी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अलौकिक	अलोकिक	क्यों	क्यूं
गौतम	गोतम	व्यवहार	व्योहार

(ट) 'ऋ' की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ब्रज	बृज	आक्रमण	आकृमण
तृतीय	त्रितीय	दृश्य	द्रश्य

(ठ) अनुस्वार (ं) की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
डाका	डांका	सोच-विचार	सोंच-विचार
पूछकर	पूंछकर	हाथ	हांथ

(ड) अनुनासिक (ँ) की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अँधेरा	अंधेरा	हँसमुख	हंसमुख
लँगोटी	लंगोटी	हँसिया	हंसिया

(ढ) विसर्ग (:) की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध
अध:पतन	अधापतन
मूलत:	मूलतय

(ण) स्वर संयोग सम्बन्धी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आओ	आवो	लिए	लीय
पियो	पिओ	साहस	सहास
हुए	हुये	आइए	आयिए

(2) व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ

(क) न और ण की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
टिप्पणी	टिप्पनी	नारायण	नारायन
चरण	चरन	कल्याण	कल्यान
रामायण	रामायन	मरण	मरन

(ख) ड, ड़, ढ, ढ़ की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
पड़ता	पडता	बड़ाई	बढ़ाई
पढ़ता	पढता	ढेर	ढ़ेर
बूढ़ा	बूढा	लुढ़कना	लुड़कना

(ग) र, ड़, ल की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
घबराना	घबड़ाना	टोकरी	टोकड़ी
छोकरी	छोकड़ी	विलाप	विरलाप

(घ) व और ब सम्बन्धी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
दबाव	दवाव	वन	बन
वर्ष	बर्ष	शब्द	शव्द

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ङ) श, ष, स की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
प्रसाद	प्रशाद	विकास	विकाश
शासन	शाशन	नाश	नास
तपस्या	तपश्या	राष्ट्र	रास्ट्र

(च) क्ष, छ की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
छात्र	क्षात्र	क्षेत्र	छेत्र
क्षुद्र	छुद्र	क्षमा	छमा

(छ) र सम्बन्धी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
आदर्श	आर्दश	प्रणाम	परणाम
नरक	नर्क	परीक्षा	प्रीक्षा

(ज) ष्ट, ष्ठ की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
कनिष्ठ	कनिष्ट	षष्ठी	षष्टी
निष्ठा	निष्टा	इष्ट	इष्ठ

(झ) य की अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
उपलक्ष्य	उपलक्ष	प्यास	पियास
कृपया	कृप्या	राधेश्याम	राधेशाम

(ञ) अक्षर लोप होने वाली अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अध्ययन	अध्यन	स्वास्थ्य	स्वास्थ
पाण्डेय	पाण्डे	सप्ताह	सप्ता

(3) हलन्त चिह्न नहीं होना चाहिए

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
नवम	नवम्	भाषागत	भाषागत्
परमपद	परम्पद	शत शत	शत् शत्

(4) पंचमाक्षर सम्बन्धी अशुद्धियाँ

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
कण्ठ	कन्ठ	शंख	शन्ख
जनता	जन्ता	संसार	सन्सार

निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करें:

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
आवयस्क	आवश्यक	उपरोक्त	उपर्युक्त
उज्जवल	उज्ज्वल	स्पश्टीकरण	स्पष्टीकरण
कृप्या	कृपया	वाणिजिक	वाणिज्यिक
सर्तकता	सतर्कता	प्रवृष्टियां	प्रविष्टियाँ
अत्याधिक	अत्यधिक	हसतान्तरण	हस्तांतरण
परवीक्षा	परिवीक्षा	छेत्रीय	क्षेत्रीय
चकव्रद्धि	चक्रवृद्धि	अंन	अन्न
व्याज	ब्याज	सलाई मद्रास	शाले मद्रास
पुर्ननिवेश	पुनर्निवेश	अधीकारी	अधिकारी
जम्मा	जमा	रूपया/रु.	रुपया
पृष्टांकन	पृष्ठांकन	अन्तराष्ट्रीय	अन्तर्राष्ट्रीय
पुसा रोड़	पूसा रोड	उलंघन	उल्लंघन

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुग्रहीत	अनुगृहीत	सन्मुख	सम्मुख
महिलाएं	महिलायें	घरिणित	घृणित
बताएं	बतायें	घोषना	घोषणा
अश्तबल	अस्तबल	घरेलु	घरेलू
अपवित्तर	अपवित्र	चोड़ाई	चौड़ाई
अवष्य	अवश्य	चोधरी	चौधरी
आर्कषित	आकर्षित	चौरान्वे	चौरानवे
अहलाद	आह्लाद	चिड़ीया	चिड़िया
खटटा	खट्टा	चिड़ाना	चिढ़ाना
ग्रेजवेट	ग्रेजुएट	चित्तर	चित्र
गृन्थ	ग्रन्थ	चिह्न	चिहन
ग्रीष्मवकाश	ग्रीष्मावकाश	चुन्ना	चुनना
गोलीयाँ	गोलियाँ	अन्नयाय	अन्याय
गोरव	गौरव	अभि	अभी
गरव	गर्व	असधारण	असाधारण
गल्त	गलत	अष्ठ	अष्ट
गलीयाँ	गलियाँ	अस्तर	अस्त्र
ग्यारा	ग्यारह	अस्तिव	अस्तित्व
गद्द	गद्य	अस्पस्ट	अस्पष्ट
गढा	गढ़ा	चूनाव	चुनाव
गवाला	ग्वाला	चौबीश	चौबीस
गर्वनर	गवर्नर	चर्ण	चरण
गूरू	गुरु	चरित्	चरित्र
गरदन	गर्दन	चिट्टियाँ	चिट्ठियाँ
गरजन	गर्जन	चोरासी	चौरासी
गदांश	गद्यांश	चौहतर	चौहत्तर
घण्टी	घंटी	चौव्वन	चौवन
घडा	घड़ा	चनदन	चंदन
घरिणा	घृणा	चन्द्र	चंद्र
घूष	घूस	चन्चल	चंचल
चिकित्शा	चिकित्सा	ग्यानी	ज्ञानी
चककी	चक्की	ग्यापन	ज्ञापन
छे	छः	ग्यात	ज्ञात
छह:	छह	जागरन	जागरण
छूट्टियां	छुट्टियाँ	झन्डा	झंडा
छोना	छौना	झंजट	झंझट
छुना	छूना	झांकियां	झाँकियाँ
छैड़खानी	छेड़खानी	झूठा	झूठा
छन्द	छंद	झुला	झूला
छेडछाड	छेड़छाड़	झेपूं	झेंपू
छँटणी	छँटनी	झौपड़ा	झोंपड़ा
छिहेत्तर	छिहत्तर	झडप	झड़प
चलाक	चालाक	झगडा	झगड़ा
छूआछूत	छुआछूत	झमैला	झमेला
जन्ग	जंग	टन्टा	टंटा
जन्गली	जंगली	टँकी	टंकी

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com